मासिक
RNI No. MPHIN/2004/14249

अक्षर वार्ता

मूल्य: 250 /- रूपये
डाक पंजीयन क्र. मालवा डिवीजन - L2/65/RNP/399/2024-2026

वर्ष - 21 अंक - 10
(अगस्त - 2025)
Vol - XXI, Issue No - X
(August - 2025)

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

ISSN : 2349 - 7521
IMPACT FACTOR - 9.0

Aksharwarta is a Monthly International, Refereed & Peer Reviewed Journal
ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 9.0
https://doi.org/10.5281/zenodo.15687695
Indexed In International, Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with IIJIF
AKSHARWARTA IS registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
» aksharwartajournal@gmail.com » https://www.aksharwartajournal.page/ » + 918989547427

अक्षर वार्ता अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 9.0
Vol - XXI, Issue - X, August - 2025

"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
https://doi.org/10.5281/zenodo.15687695

मानस के नीति-निर्झर का सिंहावलोकन

जुगल किशोर साध
डॉ. सुरेश कड़वासरा

1. शोधार्थी, हिन्दी, श्री खुशालदास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान
2. शोध निर्देशक एवं प्रोफेसर, हिन्दी, श्री खुशालदास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान

समग्र एशिया में ही नहीं समस्त भूलोक पर रामचरितमानस की सुग्राह्यता एवं लोकप्रियता अद्वितीय है। मानस की महिमा को इससे ही समझा जा सकता है कि मानस की मुट्ठीभर चौपाइयाँ कण्ठस्थ कर अपनी आजीविका चलाने वाले लाखों रामभक्त हमारे आसपास ही विचरण करते हैं। जब कहीं धर्मानुरागियों के मध्य ज्ञान-चर्चा के दौरान मानस की सूक्ति की साख दे दी जाती है तो श्रोताओं की शंकाएँ तत्क्षण निर्मूल हो जाती हैं। जब कोई अतीव शोक से व्याकुल होकर कहीं गुमसुम बैठा मिलता है तो कोई सज्जन उसके कंधे पर हाथ रखकर 'होइहि सोइ जो राम रचि राखा।' को करि तर्क बढावै शाखा' कहता है तो पीड़ित का आधा शोक तो वहीं नष्ट हो जाता है।

सुदूर गाँव-ढाणियों की चौपालों पर होने वाले रात्रि-जागरणों के गवैये तुलसीबाबा की दस-बीस सूक्तियों के प्रभाव से ही महफिल लूट लेते हैं। इससे बढकर किसी ग्रंथ की उपादेयता भला क्या होगी! रामचरितमानस काव्योपजीवियों का ही प्रिय ग्रंथ नहीं है बल्कि आमजन में भी इसकी अपार स्वीकार्यता व लोकप्रियता है। देश, नगर एवं सुदूर गांव-ढाणी में मानसकथा के पठन-पाठन, गायन, अखण्ड कीर्तन एवं सत्संगचर्या चलती रहती है।

गोस्वामीजी ने मानस केवल रत्नावली की फटकार के बनिस्पत नहीं रचा था बल्कि इसकी तैयारी वो एक-डेढ़ दशक से करने में दत्तचित रहे। अंततः पर्याप्त स्वाध्याय, सत्संग एवं चिंतन-मनन कर बयालीस वर्ष की परिपक्व अवस्था में, जिसमें न यौवन का उद्दाम आवेग होता है न वृद्धावस्था का स्मृति-भंग विकार, आपने रामकथा लेखन का श्रीगणेश किया। रामकथा में गोता लगाकर आपने जो काव्यामृत बरसाया उससे आप आधुनिक भाषा के मिस्टर परफेक्शनिस्ट बनकर उभरे। न कहीं भाव उथले है न कहीं भाषा भदेस। प्रसंगानुरूप भाषिक सुडौलता व लचीलेपन की जो गमक यहाँ मिलती है कदाचित् ही कही ओर यूं पग-पग पर सुलभ हो। बालकाण्ड मे क्रम से ऐसी अनेक पंक्तियाँ मिलेंगी जिनमें हर दूसरीचौपाई जीव-जगत्-ब्रह्म-माया के गूढ रहस्यों का रसास्वादन कराने को आतुर जान पड़ती है। कोई विरला कवि जबभक्ति व औदार्य के उच्च शिखर पर बैठा हो तो वह ब्रह्म को और निकट से तथा संपूर्ण जगत् को उच्चाकाश सेएक ही फ्रेम में देखने का सुअवसर पा ही लेता है। यही तुलसीदास ने कर दिखाया। सरस्वती के कृपा-पात्र होने का अहंकार उन्हें छू भी नही पाया। बेहद विनम्रता से कहते है- कबित बिबेक एक नहिं मोरे। सत्य कहउं लिखि कागद कोरे।।[1]

सप्तकाण्डीय मानस के नायक अयोध्या के ज्येष्ठ राजकुमार राम हैं तो विदेहसुता सीता इसकी नायिका हैं। मानस में राम के जन्म से लेकर राज्यारोहण तक की कथा है। तुलसीदास कवि होने से पूर्व मर्यादा पुरूषोत्तम राम के मर्यादावान् भक्त हैं। वे अपने आराध्य के भूलोक से गमन करने का चित्रण कर ही नहीं सकते। वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड में राम-लक्ष्मणादि के भूलोक से पलायन करने की कथामिलती है।तुलसीबाबा कदापि नहीं मान सकते कि दाशरथि राम का मृत्युलोक से पलायन हुआ होगा। कतिपय आलोचकों का यह भी मत है कि सीता-वनवास प्रसंग का वर्णन करने में संकोच का अनुभव करते हुए गोस्वामीजी ने यह प्रसंग मानस के उत्तरकाण्ड में नहीं रखा। इस पर विचार करने से पूर्व हमें वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड पर विचार कर लेना चाहिए। गीताप्रेस गोरखपुर के संस्थापक सदस्य हनुमानप्रसाद पोद्दार के मत में वाल्मीकि कृत रामायण का उत्तरकाण्ड प्रक्षिप्त है। कतिपय शोधार्थियों व रामकथा मर्मज्ञों के मतानुसार रामायण के उत्तरकाण्ड में प्रक्षिप्त अंश अवश्य है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता।वाक्य रचना, संवाद, स्थितियों के वर्णन में वाल्मीकि की अद्भुत शैली उत्तरकाण्ड में कहीं परिलक्षित नहीं होती है। कहीं से भी उत्तरकाण्ड वाल्मीकि की रचना नहीं है।[2] मेरा मानना है कि वाल्मीकि रामायण में प्रक्षिप्त सामग्री व मूल कथावस्तु के संधि-स्थल इतने धुंधले हैं कि इस पर निश्चयपूर्वक कुछ कहते नहीं बनता।

मानस साहित्यिक अवधी भाषा में लिखा महाकाव्य है जो दोहा-चौपाई शैली में लिखा गया है। मानस का भावपक्ष इतना सबल है कि इसके समक्ष कोई अन्य ग्रंथ कदाचित् ही ठहर सके। शिल्प की दृष्टि से विचारने पर मानस काव्यशास्त्र की कसौटी पर भी पूरा खरा उतरता है। प्रसंगानुसार छंद-परिवर्तन में कवि का चातुर्य दृष्टव्य है। मार्मिक प्रसंग के चरमबिन्दु पर सोरठे के अभिनव प्रयोग के उद्धरणस्वरूप केवट प्रसंग का यह सोरठा दृष्टव्य है-सुनि केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे। बिहसे करूनाएन चितइ जानकी लखन तन।।[3] बाबा काव्यशास्त्रीय तन्मयता के शिखर से जब-जब गुजरते हैं तो अलंकार संवेदना को सार्थकता प्रदान करने के लिएहाथ जोड़कर पीछे-पीछे चलने लगते हैं। यथा- दारिद दसानन दबाई दूनी दीनबंधु, दुरित दहन देखि तुलसी हहा करी।[4] करूण रस मे डूबे वृत्यानुप्रास के ये सुमन मध्ययुग की बर्बरता से उत्पन्न हेयदशा को अक्षरशः साकारकरते प्रतीत होते हैं। छंदों-अलंकारों का जैसा वैविध्य और सम्यक् प्रयोग मानस में मिलता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। डॉ.बच्चनसिंह तुलसीदास को 'रूपकों का बादशाह', आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'अनुप्रासों का बादशाह' तथा उदयभानुसिंह 'उत्प्रेक्षाओं का बादशाह' यूं ही नहीं कहते।

ग्यारहवीं शती में सोमनाथ मंदिर क्षेत्र में हुए बर्बर नरसंहार के बाद हिन्दू जाति की आस्था की नींव में गहरी दरार आ चुकी थी। यह दरार मध्यकाल के पूर्वार्द्ध तक बहुत चौड़ी होकर बिखरने को थी कि उसे तुलसी, सूर, कबीर,

मीरा, रहीम, जायसी सरीखे महाकवियों ने थाम लिया यदि इन परम उपकारियों ने कलम न उठाई होती तो हिन्दू जाति अपने प्राचीन गौरव के खण्डहरों में भूखी-प्यासी भटककर प्राण देने के कगार तक पहुँच ही गई थी। सोलहवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध को तथाकथित प्रगतिशील इतिहासकार अकबर के नाम लिखते हैं परंतु वे यह भूल जाते हैं कि तुलसीदास का कृतित्व कई अकबरों पर भारी है। कोई बादशाह तलवार की नोक पर रियासतें जोड़ सकता है, हृदय नहीं। तुलसीदासजी उत्तरी भारत की समग्र जनता के हृदय-मंदिर में पूर्ण प्रेम-प्रतिष्ठा के साथ विराज रहे हैं। भारतीय जनता का प्रतिनिधि कवि यदि किसी को कह सकते हैं तो इन्हीं महानुभाव को।" हृदयों पर निष्कंटक शासन तुलसी-से बिरले महाकवि ही करते हैं, अकबर-बाबर सरीखे राजनेता कदापि नहीं।

मध्यकाल की युगीन परिस्थितियों पर विचार करें तो हम पाते हैं कि उस दौर में हिन्दू जाति का गौरव और ईश्वर में आस्था लुप्त होने के कगार तक पहुँचगए थे। तभी कतिपय कविरूपी नर-सिंहों ने परमपुरूष के पौरूष की दहाड़ का तुमुलनाद छेड़ दिया। इनमें सबसे ऊंची दहाड़ मानसकार गोस्वामी तुलसीदास की कह दूँ तो कोई अतिशयोक्ति प्रतीत नहीं होती। यह शंखनाद सुन निराश जाति के मुख पर आत्मबल व साहस की अपूर्व आभा लौट आई। समुद्र से तीन दिन तक रास्ता देने के लिए निरर्थक अनुनय-विनय करने के बाद धनुर्धारी राम के क्रोध का ज्वालामुखी फट पड़ा-

विनय न मानत जलधि जड़, गए तीनि दिन बीति।
बोले राम सकोप तब, भय बिनु होइ न प्रीति।।"

पहली बात, यहाँ तुलसीदास राम के द्वारा केवल समुद्र पर ही कुपित नहीं होते बल्कि वे हर उस व्यक्ति या सत्ता पर कुपित होते हैं जिनके लिए आमजन की पीड़ा का कोई मूल्य नहीं है अथवा जो आमजन को पीड़ा में डालकर आनंदित होते हैं। ऐसे आततायियों को उन्हीं की भाषा में समझाना नीति-सम्मत होता है। गोस्वामीजी से बेहतर कौन जानता है कि किस प्रसंग में किस पात्र को कैसे उभारना है। समुद्र का मान-मर्दन कर राम नीति-मार्ग का अनुसरण करने व करवाने का सिंहनाद करते हैं। राम का यह गगनघोष रावण का भी हृदय विदीर्ण कर देता है, अन्य आततायियों की क्या कहें।

भारतवर्ष के हृदय मंदिर में विराजमान राम कभी नीतिच्युत नहीं हो सकते। राम तब भी नीतिविमुख नहीं होते जब उन्हें राज्याभिषेक के स्थान पर वन-गमन की आज्ञा दी जाती है, अन्य कोई महाज्ञानी ऐसे वज्रपात को राम की तरह मुस्कुराकर सह पाता, इसमें संदेह है। राम तब भी नीति-त्याग नहीं करते जब संपूर्ण समाज, जिसमें महर्षि वशिष्ठ, विदेह जनक, भरत, कौशल्यादि माताएँ शामिल हैं, उन्हें मनाने चित्रकूट पहुँचता है। वहाँ चित्रकूट सभा में सूर्यवंश के प्रतापी गुरू वशिष्ठ उन्हें भरत के प्रेमातिरेक पर सहानुभूति रखते हुए पित्राज्ञा परपुनर्विचार करने को कहते है तब भी राम नीतिच्युत नहीं होते। इतने लोगों के निवेदन के बाद अन्य कोई वीर हुतात्मा ऐसे सुअवसर पर भी क्या वन-वन खाक चुनने को ही श्रेय मानता, कदाचित् कदापि नहीं। पर राम तो केवल राम हैं। वे पग-पग नीति के नये सोपान रचते हैं। उनकी करूणा प्राणिमात्र के सुख के निमित्त है, व्यक्तिगत नहीं। रघुवंशी राम 'रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्रान जाहुँ बरू बचनु न जाई।।" के पोषक हैं। वे कभी वचनच्युत नहीं हो सकते फिर चाहे उसका कितना ही मूल्य क्यों न चुकाना पड़े। वे परम नीतिवान् एवं धर्मधुरंधर हैं, उनके यहाँ करूणा और कर्त्तव्य साथ-साथ चलते हैं। वे नीति के पथ से एक क्षण भी दूर नहीं होते। यदि देश का हर आदमी अनीति के खिलाफ हो जाए तो अनीति में इतना साहस नहीं कि वह नीतिवानों से नजर भी मिला सके, प्रतिकार तो दूर की बात है। तुलसी का अभीष्ट भी तो यही है।

दूसरी बात, अरस्तू ने भय और त्रासदी के विरेचन का जो मनोवैज्ञानिक पाठ पढाया था, यहाँ उसका सस्वर वाचन हो रहा है। शुतुरमुर्ग की तरह अपना सिर जमीन में गढ़ाए तत्कालीन भयग्रस्त समाज के आत्मबल को बढाने में मानस सरीखा अवदान कदाचित् किसी अन्य काव्यकृति काभीहो सकता है, कुछ कह नहीं सकते।

गोस्वामीजी का अध्यात्म पंगु नहीं है बल्कि वह पूर्ण सामर्थ्य के साथ समाज में रिक्त हो चुके साहस और करूणा के कोष को आकण्ठ भरने को तत्पर जान प?ता है। उनके आदर्शवाद में पर्याप्त शक्ति है। मानस की अद्भुत बात यही है कि इसके काव्य-सुमनों के संस्पर्श मात्र से जीव गहरे आत्मबल व चिर-सनाथ होने की जीवनदायिनी अनुभूति से छलकने लगता है। उदाहरण स्वरूप वर्तमान में रामकथा के अप्रतिम मूर्धन्य शुक प्रस्थानत्रयी भाष्यकार सर्वांगचक्षु जगद्गुरु श्रीरामभद्राचार्य की विलक्षण मेधाशक्ति व संपूर्ण वाङ्मयपर उनकी गहरी पकड़ स्तुत्य है। वर्तमान के रामकथा-मर्मज्ञों में उनका ऊँचा स्थान है। राम से सच्चा स्नेह रखने वाले वैष्णवजन को जगदीश्वर राम की ही कृपानुभूति नहीं मिलती बल्कि यह संसार भी उसे सर-आँखों पर बिठा ही लेता है। एक उत्तम रचनाकार अपने युग के संकटों व टकराहटों को बहुत जल्दी भाँप लेता है फिर वह उस कुचक्र के समानान्तर एक ऐसा मार्ग ढूँढने का प्रयास करता है, जहाँ न केवल विरोधी पक्ष अपने अतिवादों का परित्याग कर साथ-साथ चल सके बल्कि पी?ित जन भी साहस व गर्व के साथ चल सके। गोस्वामीजी समन्वय का साक्षात कराने में निष्णात हैं। उनका समग्र काव्य-संसार समन्वय की आधारभूमि पर खड़ा है। वैष्णवों व शैवों के मध्य आराध्य की श्रेष्ठता के विवाद को वे निर्मूल साबित करने को आतुर दिखते हैं-

सिव द्रोही मम दास कहावा। सो नर सपनेहुं मोहि न पावा।।
संकर बिमुख भगति चह मोरी। सो नारकी मूढ मति थोरी।।"

तुलसीकाव्य के मर्मज्ञ आलोचक हजारीप्रसाद द्विवेदी तुलसीदास की समन्वय शक्ति से संसार का परिचय कराने के निमित लिखते हैं- उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है। लोक और शास्त्र का समन्वय, गार्हस्थ्य और वैराग्य का समन्वय, भक्ति और ज्ञान का समन्वय, कथा और तत्व-ज्ञान का समन्वय, ब्राह्मण और चाण्डाल का समन्वय, पांडित्य और अपांडित्य का समन्वय- रामचरितमानस शुरू से आखिर तक समन्वय का काव्य है।"[9]

तुलसीदास भक्त-शिरोमणि, कवियों के कवि एवं महान नीति-विशारद हैं। वे न केवल परंपरा-सम्मत नीति-कुशलता के प्रबल हिमायती हैं बल्कि उसमें निहित दोषों को दूर कर पुनः संस्कारित करने में भी कुशलहस्त हैं। नीति की आधारशिला पर लोकमंगल का भवन खड़ा होता है। हिन्दी साहित्य के अग्रणी आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल तुलसीदास के समग्र काव्य के केन्द्र में लोकमंगल को मानते हैं। कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहं हित होई।।" लोकमंगल ही तो संसार की सर्वश्रेष्ठ नीति है। लोकमंगल का राजनीतिक संस्करण ही समाजवाद है। लोकतंत्र में समाजवाद से बेहतर कोई नीति नहीं हो सकती। अतः गोस्वामीजी का कुशल नीतिकार होना स्वतः सिद्ध है। विश्वस्तर के अग्रणी नीतिकारों की सूची में गोस्वामीजी का स्थान अग्रिम पंक्ति में सदैव सुरक्षित रहेगा। उनके शब्दों में ही नहीं बल्कि हृदय में भी नीति का नित्य निवास है तभी तो भक्तिकाल के अग्रणी नीतिकार रहीम उनके प्रिय मित्र ही नहीं, परामर्शदाता भी हैं। रहीम के अनुरोध पर ही आपने 'बरवै रामायण' लिखी। गोस्वामीजी वस्तुतः अपने समग्र काव्य द्वारा एक ऐसी व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे जो परिवार एवं समाज में नैतिक मूल्यों की पक्षधर हो।

रामचरितमानस के सत्-पात्रों में भरत का चरित्र अत्यंत उज्वल व सर्वांगसुंदर है। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी भरत अटूट भ्रातृ-प्रेम, सदाचार, त्याग व साधुत्व से लकदक रहते हैं। उनमें धर्म और नीति की अजस्र सरिता सदैव प्रवाहमान रहती है। अनेक संघर्षमयी परिस्थितियों में भी भरत अपने अदम्य साहस, अटूट धैर्य, तथा अपार शक्ति द्वारा पूर्णरूपेण खरे उतरते हैं। प्रलोभनों का विशाल साम्राज्य उनके चारों ओर फैला हुआ है, दशरथ-मरण, राम-वनवास, मातृ-परित्याग, आत्मग्लानि, जनसाधारण की सशंकित दृष्टि भी भरत सरीखे धैर्यवान भक्त को कर्त्तव्यनिष्ठा से डिगा न सकी।[12]

परम नीतिवान् भरतजब शोकार्त होकर माता कैकेयी और मंथरा की भर्त्सना करते हैं तो कथित नारीवादियों को ही नहीं बल्कि सामान्य पाठक को भी उनका यह बर्ताव अखरता है। परंतु मानस के सर्वाधिक मार्मिक-प्रसंग चित्रकूट-सभा में भरत के प्रेम-ज्ञान-नीतियुक्त वचन सुन उपस्थित सर्वसमाज ही नहीं बल्कि ब्रह्मापुत्र वशिष्ठ और ज्ञाननिधि विदेहराज जनक भी एकबारगी साश्चर्य ज्ञानशून्य-से हो जाते हैं। राम चरणों में नित्य वास करने के समक्ष भरत चारों पुरूषार्थों को ठुकरा कर एक नवीन नीति की प्रतिष्ठा करते हैं-अरथ न धरम न काम रूचि गति न चहऊँ निरबान। जनम जनम रति रामपद यह बरदानु न आन।।[13] जब भावुकता नैतिक होकर विचारणीय हो जाए तो समझो पात्र व सर्जनकर्ता सफल हुए। तुलसी को महज पुरातनपंथी मानने वालों को मानस के इस दोहे पर विचार कर अपनी पूर्व-धारणा में संशोधन करना चाहिए। नीति-नवोन्मेष का यह उद्धरण गोस्वामीजी को प्रगतिशील मनवाये तो इसमें कैसा आश्चर्य!

संपूर्ण रामायण कथा राम के गुणों और उनके पुरूषार्थ को दर्शाती है किंतु सुंदरकाण्ड एकमात्र ऐसा काण्ड है, जो सिर्फ हनुमानजी के साहस,शीलव नीतिज्ञता का बखान करने वाला अद्भुत काण्ड है।राम के अनन्य भक्त हनुमान के दुस्साहस व नीति-कुशलता का लोहा तो शत्रु रावण ने भी माना था। अनन्त पारावार को पारकरना, शत्रु की राजधानी में बलपूर्वक प्रवेश करनाएवं सीता का पता लगाना कोई सरल कार्य नहीं था। अपनी जान हथेली पर रखकर दुश्मन के घर में घुसना, मृत्यु को चुनौती देना था,परंतु हनुमान् ने निश्चय कर लिया था कि चाहे इस कार्य में प्राणों की बाजी ही क्यों न लगानी पड़े मुझे राम का काम तो किसी भी प्रकार से करना ही है-राम काज कीन्हें बिनु मोहि कहां विश्राम।स्वामी के हितार्थ प्राणोत्सर्ग को उद्धत रहने वाले वज्रांग हनुमानजी की भक्ति और नीति पाठकों पर अमिट छाप छोड़ती है। सुंदरकाण्ड में हनुमानजी को 'ज्ञानिनाम् अग्रगण्यम्' कहा गया है। ज्ञानी वही है जिसमे विवेक जाग्रत् रहे। विवेकवान मनुष्य ही तो उच्च कोटि के नीतिज्ञ होते हैं। आज भी प्रत्येक हिन्दू के घर में उनका चित्र विद्यमान है तथा उनकी पूजा किसी-न-किसी रूप में अवश्य होती है।[14] हनुमानजी का समग्र व्यक्तित्व रामचरणानुराग, साहस व लोकमंगल का अनहद नाद है जिसकी अनुगूँज सृष्टिपर्यंत ब्रह्माण्ड में बनी रहेगी।

तुलसीदासजी हमारे सम्मुख उन कठिनाइयों का चित्रण अवश्य करते हैं जो आदर्शवाद को संसाररूपी अग्नि-कांड में झेलनी पड़ती है, परंतु उनके आदर्शवाद में पर्याप्त शक्ति है और उनके जगत् में भी पर्याप्त आध्यात्मिकता और सहानुभूति है।[15] किष्किन्धाकाण्ड के प्रसंगानुसार मित्र के हृदय की व्याकुलता को भूल सत्तासुख भोगने में लिप्त सुग्रीव के व्यवहार से राम क्षुब्ध हो उठते हैं। विरहाकुल राम की दशा उस आदर्शजीवी समाजसेवक सरीखी हो जाती है जो सबके काम आता है मगर उसकी व्यक्तिगत पीड़ा में किसी का काम आना तो दूर कोई उसकी ओर मुँहतक नहीं करता। मगर राम तो फिर राम ही हैं। पुनः संघर्ष की हुँकार भरते हैं। लक्ष्मण के हाथ संदेश भिजवाते हैं कि बालि जिस मार्ग से गया है वो मार्ग अभी तक अवरूद्ध नहीं हुआ। राम जानते हैं कि सतत् संघर्ष से ही उत्कर्ष होगा, यही शास्त्रोक्त नीति है। अतः शीघ्र ही परिस्थितियाँ हारने लगती हैं। कदाचित् संघर्ष से उत्कर्ष नहीं हुआ तो समाज अनीति-अराजकता के मार्ग पर चल पड़ेगा।

रामचरितमानस की सी कविता केवल मस्तिष्कीय उद्योग से नही लिखी जा सकती। यहाँ तो मिल्टन के कथनानुसार पहले अपने ही जीवन को काव्यमय बनाना पड़ेगा। मानस तुलसी की काव्यमयी भक्ति का उतुंग शिखर है तो विनयपत्रिका भक्ति-रस के परिपाक का सर्वोच्च शिखर। इसी काव्यमयता से ओत-प्रोत तुलसीदास की बारहों प्रामाणिक रचनाओं में से अधिकांश का प्रभाव कालातीत है। विनयपत्रिका, कवितावली, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, बरवै रामायण, रामाज्ञा प्रश्नावली, हनुमान चालीसा, संकटमोचन, बजरंग बाण व हनुमान बाहुक आदि की सर्वग्राह्यता व अपार लोकप्रियता तुलसीदास के काव्यमयी जीवन का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

मानसकार न केवल पुरूष पात्रों की भक्ति व नीतिपरकता का युक्तियुक्त बखान करने में कुशल है बल्कि त्याग-मूर्ति कर्त्तव्यारूढ नारी पात्रों में करूणा, समर्पण व नैतिकता के नये क्षितिजों का प्रवर्तन करताचलता है। इस संदर्भ में रामचरणानुरागी त्रिजटा का उद्धरण दृष्टव्य है। त्रिजटा नाम राक्षसी एका। रामचरन रति निपुन विवेका।।[16] राक्षसकुल में जन्मने के बावजूद त्रिजटा परम वैष्णव एवं सदाचार से युक्त नारी रत्न है। मानस में मात्र इसी राक्षसी के लिए गोस्वामीजी ने 'रामचरित निपुन विवेका' कहा है। दुःख व वेदना से कृशकाय होती सीता को वह सांत्वना देती है। उसके साथ ही धमकाने वाली राक्षसियों को डांटती है।[17] सात्विक आचरणयुक्ता एवं नारी-सुलभ ईर्ष्या से कोसो दूर रहने वाली त्रिजटा नैतिकता की नयी परिभाषा गढतीप्रतीत होती है। आजीविका के निमित्त उसकी देह स्वामी रावण के अधीन है, परंतु आत्मा की स्वतंत्रता को उसने अक्षुण्ण बनाए रखा है। एक स्वतंत्र आत्मा ही नीति के मार्ग को अवरूद्ध होने से रोक सकती है।

यह कहने में दास कोई संकोच अनुभव नहीं करता कि मानस के समान नीति का बखान करने वाला महाकाव्य कदाचित् ही कोई दूसरा हो। मानस का हर पात्रस्वार्जित नीति के आभामण्डल में डोलायमान होकर कथावस्तु को एक स्थिर आधार ही प्रदान नहीं करता बल्कि सर्वसमाज में नीति-सम्मत आचरण के श्रेय-प्रेय होने की उद्घोषणा भी करता है। भक्ति ज्ञान वैराग्य नीति एवं सदाचार के उत्कृष्ट गुणों से यह ग्रंथ परिपूर्ण है और विशेष बात यह है कि रामचरितमानस एक आशीर्वादात्मक ग्रंथ है जिसकी प्रत्येक पंक्ति का भारत की धर्मपरायण जनता मंत्रवत् आदर करती है तथा अनेक चौपाइयों के पाठ से अपने हृदय को शुद्ध कर लौकिक एवं पारमार्थिक कार्य सिद्ध करती है।[18] रामचरितमानस नीतिसुधा से छलकता वह चषक है जिसके स्पर्श मात्र से ही रामानुरागियों के हृदय खिल उठते है।नीति की जब-जब गवेषणा की जाएगी, मानस को आधार ग्रंथों में रखे बिना उसकी प्रामाणिकता संदिग्ध रहेगी।

संदर्भ सूची:-

1. हनुमान प्रसाद पोद्दार (टीकाकार): श्रीरामचरितमानसबालकाण्ड 51/7गीताप्रेस गोरखपुर नवमसंस्करण विक्रम सं.2013 पृष्ठ सं. 82
2. हनुमान प्रसाद पोद्दार (टीकाकार): श्रीरामचरितमानसबालकाण्ड 8/6 गीताप्रेस गोरखपुर नवमसंस्करण विक्रम सं.2013पृष्ठ सं. 41

3. डॉ. रजनीरमण झा -राम द्वारा सीता का निर्वासन एवं शम्बूक वध :सर्वथा झूठी कहानियाँ स्वप्रकाशित(बीकानेर)अष्टम संस्करण वर्ष 2024पृष्ठ सं.97
4. हनुमान प्रसाद पोद्दार (टीकाकार): श्रीरामचरितमानस अयोध्याकाण्ड 100 गीताप्रेस गोरखपुर नवमसंस्करण विक्रम सं.2013 पृष्ठ सं. 414
5. इन्द्रदेव नारायण(अनुवादक): गोस्वामीतुलसीदासजी विरचित: कवितावली उत्तरकाण्ड गीताप्रेस गोरखपुर दशम संस्करण विक्रम सं.2009 पृष्ठ सं. 163
6. आचार्य रामचंद्र शुक्ल : हिन्दी साहित्य का इतिहास नागरीप्रचारिणी सभा काशी पाँचवाँसंस्करण विक्रम सं.2006पृष्ठ सं. 138
7. हनुमान प्रसाद पोद्दार (टीकाकार): श्रीरामचरितमानससुंदरकाण्ड दोहा 57 गीताप्रेस गोरखपुर नवमसंस्करण विक्रम सं.2013 पृष्ठ सं. 735
8. हनुमान प्रसाद पोद्दार (टीकाकार): श्रीरामचरितमानस अयोध्याकाण्ड 27/2 गीताप्रेस गोरखपुर नवमसंस्करण विक्रम सं.2013 पृष्ठ सं. 357
9. हनुमान प्रसाद पोद्दार (टीकाकार): श्रीरामचरितमानस लंकाकाण्ड: 1/7-8 गीताप्रेस गोरखपुर नवमसंस्करण विक्रम सं.2013 पृष्ठ सं. 741
10. हजारी प्रसाद द्विवेदी: हिन्दी साहित्य की भूमिका हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बईतृतीय संस्करण वर्ष 1948 पृष्ठ सं.104
11. हनुमान प्रसाद पोद्दार (टीकाकार): श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड 13/5 गीताप्रेस गोरखपुर नवमसंस्करण विक्रम सं.2013 पृष्ठ सं. 46
12. डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय व डॉ. रविशंकर उपाध्याय: रामचरितमानस के प्रमुख पात्र संदेश प्रकाशन वाराणसी वर्ष 2017 पृष्ठ सं.57
13. हनुमान प्रसाद पोद्दार (टीकाकार): श्रीरामचरितमानस अयोध्याकाण्ड दोहा 204 गीताप्रेस गोरखपुर नवमसंस्करण विक्रम सं.2013 पृष्ठ सं. 496
14. शांतिलाल नागर-हनुमान ट्रांसग्लोबल पब्लिशिंग कं.दिल्ली वर्ष 2020 भूमिका
15. राजबहादुर लमगोड़ा : विश्व साहित्य में रामचरितमानस: पहला भाग नागरी प्रचारिणी सभा काशी विक्रम सं.2000 पृष्ठ सं.11
16. हनुमान प्रसाद पोद्दार (टीकाकार): श्रीरामचरितमानस सुंदरकाण्ड 10/1 गीताप्रेस गोरखपुर नवमसंस्करण विक्रम सं.2013 पृष्ठ सं. 695
17. संपादिका डॉ.बृजबाला सिंह : रामकथा: वैश्विक परिदृश्य यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन नई दिल्ली वर्ष 2019 पृष्ठ सं.39
18. हरीसिंह: रामकथा (प्रथम भाग) यूनिक ट्रेडर्स जयपुरवर्ष 2013 पृष्ठ सं. 04